प्रमुख किसान सभा का गठन एक दृष्टि में			
किसान सभा	**संस्थापक/ नेता**	**वर्ष**	**क्षेत्र**
उत्तर प्रदेश किसान सभा	गौरीशंकर मिश्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी मदन मोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरु	1918	उ०प्र०
अवध किसान सभा	बाबा रामचन्द्र	1920	उ०प्र०
आंध्र प्रांतीय रैय्यत (किसान) सभा	एन. जी. रंगा	1928	आ०प्र०
बिहार किसान सभा	स्वामी सहजानंद सरस्वती	1929	बिहार
उत्कल प्रांतीय सभा	मालती चौधरी	बीसवीं सदी	ओड़िशा
कृषक प्रजा पार्टी	फजलुलहक, अकरम खान, अदुरहीम	1929	बंगाल
अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	1936	लखनऊ
प्रथम भारतीय किसान स्कूल	एन. जी. रंगा	1938	आन्ध्र प्रदेश

प्रमुख किसान आन्दोलन : एक दृष्टि में			
आन्दोलन/संगठन/विद्रोह	**संस्थापक/अध्यक्ष/ नेता**	**वर्ष**	**प्रभावित क्षेत्र**
नील किसान विद्रोह	दिगम्बर विश्वास एवं विष्णु विश्वास	1859-60	बंगाल तथा बिहार
पावना किसान विद्रोह	ईशानराय, शंभुपाल, केशवचन्द्र राय	1873-76	बंगाल
दक्कन किसान विद्रोह	जस्टिस रानाडे	1875	पुणे एवं अहमदनगर (महाराष्ट्र)
मोपला किसान विद्रोह	सैयद अलावी एवं सैयद फजल पुक्कोया बाद में अलीमुसलियार	1836-54 एवं 1921	मालाबार क्षेत्र (केरल)
फड़के विद्रोह	वासुदेव बलवंत फड़के	1879	महाराष्ट्र
बिजौलिया आंदोलन	साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक	1913-41	बिजौलिया (राजस्थान)
चम्पारण सत्याग्रह	महात्मा गाँधी	1917	बिहार
अवध किसान आन्दोलन	गौरी शंकर मिश्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी	1918-20	आगरा तथा अवध क्षेत्र
खेड़ा सत्याग्रह	महात्मा गाँधी	1948	गुजरात
एका आन्दोलन	मदारी पासी, सहदेव	1921-22	उत्तर प्रदेश
बारदोली सत्याग्रह	वल्लभभाई पटेल	1928	गुजरात
बकाश्त कृषक आन्दोलन	यदुनंदन शर्मा, यमुना कार्यों एवं राहुल सांकृत्यायन, स्वामी श्रद्धानंद	1938-47	बिहार
वर्ली विद्रोह	गोदावरी पुरूलेकर	1945	बम्बई
पुत्रप्रा एवं वायत्लार विद्रोह	किसान एवं मजदूर	1946	त्रावणकोर (केरल)
तेभागा आन्दोलन	कम्पाराम, भवन सिंह	1946-50	त्रिपुरा, बंगाल
तेलंगाना आन्दोलन	कमरैया	1946-51	आन्ध्र प्रदेश

कांग्रेस अधिवेशनः एक दृष्टि में			
वर्ष	**अध्यक्ष**	**स्थान**	**विशिष्टताएँ**
1885	व्योमेश चन्द्र बनजी	बंबई	इसमें 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, आई.सी.एस.परीक्षा का भारत में आयोजन की माँग।
1886	दादा भाई नौरोजी	कलकत्ता	436 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका की पृथकता।
1887	बदरूद्दीन तैयबजी	मद्रास	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष, प्रथम बार तमिल भाषा में भाषण दिया गया। शस्त्र अधिनियम में संशोधन।
1888	जार्ज यूले	इलाहाबाद	प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष प्रथम बार हिन्दी में अभिभाषण औद्योगिक व तकनीकी शिक्षा का विकास।
1889	विलियम वेडरबर्न	बंबई	कांग्रेस में सरकारी अधिकारी के भाग लेने पर रोक।
1890	फिरोजशाह मेहता	कलकत्ता	प्रथम बार महिलाओं ने भाग लिया। लागत नीति में सुधार।
1891	पी० आनंद चार्लू	नागपुर	कांग्रेस के नाम में पहली बार राष्ट्रीय शब्द जोड़ा गया।
1892	व्योमेश चंद्र बनर्जी	इलाहाबाद	मुद्रानीति में सुधार।
1893	दादाभाई नौरोजी	लाहौर	इस अधिवेशन में सिविल सर्विसेज परीक्षा भारत में करवाने की मांग की गई। बेगार प्रथा पर रोक।
1894	अलफ्रेड वेब	मद्रास	सूती उद्योग को संरक्षण।
1895	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी	पूना	'सोशल कांफ्रेंस' कांग्रेस के मंच से बन्द किसानों की ऋण समस्या का निराकरण।
1896	रहीमतुल्ला सायनी	कलकत्ता	बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 'वंदेमातरम्' का गान पहली बार गाया था।' नौरोजी ने धन के निष्कासन का सिद्धान्त पेश किया गया था। प्रान्तों को अधिक स्वायत्तता।
1897	शंकरन नायर	अमरावती	राष्ट्रद्रोह एक्ट का विरोध।
1898	आनंद मोहन बोस	मद्रास	वन्य कानून में संशोधन।
1899	रमेश चंद्र दत्त	लखनऊ	शिक्षा व उद्योग समस्याओं का निराकरण।
1900	नारायण गणेश चंदावरकर	लाहौर	सरकारी विभागों के उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति।

KHAN SIR

क्रम	वर्ष	अध्यक्ष	स्थान	विशेष उपलब्धि
17वाँ	1901	दिनशा इदुलजी वाचा	कलकत्ता	चाय बागानी के श्रमिकों के शोषण पर रोक।
18वाँ	1902	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	अहमदाबाद	भारत के सैनिक व्यय में कमी।
19वाँ	1903	लाल मोहन घोष	मद्रास	भारतीय विश्वविद्यालय एक्ट का विरोध।
20वाँ	1904	सर हेनरी काटन	बंबई	कर्जन की नीतियों का विरोध।
21वाँ	1905	गोपाल कृष्ण गोखले	बनारस	बंग-भंग की निंदा लाला लाजपत राय ने प्रथम बार सत्याग्रह को अपनाने का दिया था। स्वराज्य पर चर्चा गोखले को 'विपक्ष के नेता' की उपाधि दी गयी।
22वाँ	1906	दादा भाई नौरोजी	कलकत्ता	'स्वराज' राष्ट्रीय आन्दोलन का लक्ष्य घोषित।
23वाँ	1907	रास बिहारी घोष	सूरत (स्थगित)	कांग्रेस का नरम-गरम दल में विभाजन।
23वाँ	1908	रास बिहारी घोष	मद्रास	कांग्रेस के संविधान का निर्माण, फौजदारी कानून में संशोधन।
24वाँ	1909	मदन मोहन मालवीय	लाहौर	निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा।
25वाँ	1910	विलियम वेडरबर्न	इलाहाबाद	भारतीय प्रेस एक्ट का विरोध।
26वाँ	1911	विशन नारायण दर	कलकत्ता	रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित 'राष्ट्रगान' (जन-गण-मन) कांग्रेस मंच से प्रथम बार गाया गया था। सरकार की कठोर नीतियों का विरोध
27वाँ	1912	रा.ब. रघुनाथ नृसिंह मुधोलकर	बांकीपुर	ह्यूम को कांग्रेस का पिता घोषित।
28वाँ	1913	नवाब सैय्यद मुहम्मद बहादुर	करांची	–
59वाँ	1914	भूपेन्द्र नाथ बोस	मद्रास	मद्रास गवर्नर लाई पेंटलैण्ड की उपस्थिति।
30वाँ	1915	सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा	बंबई	कांग्रेस व मुस्लिम लीग के संयुक्त अधिवेशन पर सहमति।
31वाँ	1916	अंबिका चरण मजमदार	लखनऊ	नरम-गरम दल में मिलन तथा मुस्लिम लीग के साथ समझौता।
32वाँ	1917	एनीबेसेंट	कलकत्ता	प्रथम महिला अध्यक्षा सर्वप्रथम तिरंगे झण्डे को कांग्रेस ने अपनाया था।
33वाँ	1918	मदन मोहन मालवीय	दिल्ली	नरमपंथियों का इस्तीफा।
34वाँ	1919	मोती लाल नेहरू	अमृतसर	खिलाफत आन्दोलन का समर्थन।
35वाँ	1920	चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य	नागपुर	कांग्रेस के संविधान में परिवर्तन असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पेश किया गया।
36वाँ	1921	हकीम अजमल खां (कार्यकारी)	अहमदाबाद	अध्यक्ष सी० आर० दास जेल में थे। इस लिये अध्यक्षता अजमल खाँ ने की।
37वाँ	1922	चितरंजन दास	गया	–

क्रम	वर्ष	अध्यक्ष	स्थान	विशेष उपलब्धि
38वाँ	1923	मौलाना मोहम्मद अली जौहर	काकीनाडा	अखिल भारतीय खादी बोर्ड की स्थापना।
39वाँ	1924	महात्मा गांधी	बेलगांव (कर्नाटक)	कांग्रेस कार्यकारिणी में स्वराजवादियों का बहुमत।
40वाँ	1925	सरोजनी नायडू	कानपुर	प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग किया गया था विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का गायन किया गया।
41वाँ	1926	श्री निवास अयंगर	गुवाहाटी	सदस्यता के लिए खादी वस्त्र अनिवार्य।
42वाँ	1927	डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी	मद्रास	पूर्ण स्वाधीनता की माँग साइमन कमीशन का विरोध।
43वाँ	1928	मोतीलाल नेहरू	कलकत्ता	प्रथम युवा कांग्रेस की बैठक (अध्यक्ष नेहरू)
44वाँ	1929	जवाहर लाल नेहरू	लाहौर	पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित।
45वाँ	1931	सरदार पटेल	करांची	मौलिक अधिकारों पर प्रस्ताव तथा आर्थिक नीति का प्रस्ताव पारित गांधी इरविन समझौते का अनुमोदन।
46वाँ	1932	रणछोड़ दास अमृतलाल	दिल्ली	–
47वाँ	1933	श्रीमती नेल्ली सेन गुप्ता	कलकत्ता	–
48वाँ	1934	राजेंद्र प्रसाद	बंबई	कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना।
49वाँ	1936	जवाहर लाल नेहरू	लखनऊ	कांग्रेस का लक्ष्य समाजवाद निर्धारित किया गया।
50वाँ	1937	जवाहर लाल नेहरू	फैजपुर (महाराष्ट्र)	प्रथम अधिवेशन जो गाँव में हुआ, मूलभूत कृषिभूमि कार्यक्रम का प्रस्ताव
51वाँ	1938	सुभाष चंद्र बोस	हरिपुरा (गुजरात)	सुभाष चंद्र राष्ट्रीय नियोजन समिति का गठन किया की स्वतंत्रता का समावेश संबंधी प्रस्ताव पारित।
52वाँ	1939	सुभाष चंद्र बोस	त्रिपुरी (जबलपुर म.प्र.)	प्रथम बार अध्यक्ष पद के लिए मतदान। सुभाष चन्द्रबोस के अध्यक्ष पद से त्यापत्र के पश्चात डा. राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष बने।
53वाँ	1940-45	अबुलकलाम आजाद	रामगढ़	आजाद भा. रा. कां. के सर्वाधिक समय तक अध्यक्ष रहे।
54वाँ	1946	जे.बी. कृपलानी	मेरठ	स्वतंत्रता प्राप्ति के समय 1947 ई0 में यह अध्यक्ष पद पर आसीन थे।
55वाँ	1948	पट्टाभिसीतारमैया	जयपुर	–

भारतीय क्रांतिकारी संगठन : एक दृष्टि में			
संगठन	**स्थापना**	**संस्थापक**	**स्थल**
व्यायाम मंडल	1896-97	दामोदर तथा बालकृष्ण चापेकर बन्धु	पूना
मित्र मेला	1899	विनायक दामोदर सावरकर व गणेश सावरकर	महाराष्ट्र, बंगाल
अभिनव भारत समाज	1904	सावरकर बन्धु	महाराष्ट्र
ढाका अनुशीलन	1904	पी. मित्रा व पुलिन दास	पंजाब
भारत माता सोसायटी	1904	अजीत सिंह व आम्बा प्रसाद	ढाका
युगांतर अंजुमाने मोहिब्बाने वतन	1906	वी.के. घोष, भूपेन्द्रनाथ दत्त सरदार अजीत सिंह	लाहौर
अनुशीलन समिति	1907	वरीन्द्र कुमार घोष, जतीन्द्रनाथ बनर्जी, प्रबोध मित्र, पुलिन दास सतीशचन्द्र बोस	कलकत्ता
हिन्दुस्तान रिपब्लिकिन एसोसिएशन	1924	सचींद्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी	कानपुर
नौजवान सभा	1926	भगत सिंह पंजाब	महाराष्ट्र
हिन्दुस्तान सोशलिस्ट	1928	चंद्रशेखर आजाद	दिल्ली
इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी		सूर्यसेन	चटगांव (बंगाल)

- ❖ इस समय कालिका आतंकवाद दो धाराओं में विकसित हुआ एक पंजाब, उ०प्र० और बिहार तथा दूसरा बंगाल में।

➢ **उत्तरी भारत में क्रांतिकारी आंदोलन**

- ❖ उत्तर भारत के महत्वपूर्ण कांतिकारी नेताओं में सनीन्द्रनाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिता चंद शेखर आजाद आदि शामिल थे।
- ❖ क्रांतिकारी आतंकवादी आंदोलन के द्वितीय चरण में सान्याल की पुस्तक **बंदी जीवन** (हिन्दी, गुरुमुखी भाषा) ने अनेक युवाओं को क्रांति के प्रति आकर्षित किया।
- ❖ अक्टूबर 1924 में सवीन्द्र सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल, चंद्र शेखर आजाद ने कानपुर में कांतिकारी संस्था **हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन** (एन. आर. ए.) की स्थापना की।
- ❖ एन. आर. ए. के उद्देश्यों में शामिल था–
  - (i) संगठित सशस्त्र क्रांति के द्वारा ब्रिटिश सत्ता को समाप्त कर एक 'संघीय गणतंत्र' की स्थापना की जाये जिसे 'संयुक्त राज्य भारत' कहा जाय।
  - (ii) आंदोलन की सफलता के लिये शस्त्र और धन एकत्र करने के लिए राजनैतिक डकैतियों सहित राजनैतिक अपहरण।
  - (iii) एन.आर. ए. की अनेक शाखायें स्थापित करना।
- ❖ एन. आर. ए. द्वारा 9 अगस्त, 1925 को उत्तर रेलवे के लखनऊ सहारनपुर संभाग के **काकोरी** नामक स्थान पर '8 डाउन ट्रेन' पर डकैती डालकर सरकारी खजाने को लूट लिया गया। यह घटना **काकोरी काण्ड** के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- ❖ सरकार ने समूत्र का पता कर 29 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल, असफाकुल्ला, रोशन लाल, राजेन्द्र लहड़ी आदि पर मुकदमा चला कर फांसी दे दी गई। काकोरी काण्ड में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के चन्द्रशेखर आजाद को छोड़कर सभी सदस्यों को गिरफ्तारी से संगठन का अस्तित्व समाप्त हो गया।
- ❖ चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में **सितम्बर 1928** को दिल्ली के फिरोजशाहा कोटला मैदान में **हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन** को स्थापना की गई।
- ❖ एच. एस. आर. ए. का उद्देश्य भारत में एक समाजवादी गणतंत्रवादी राज्य की स्थापना करना था, यह एक लोकतांत्रिक संगठन था जिसमें बहुमत को महत्व दिया जाता था।
- ❖ साइमन कमीशन के विरोध के समय लाला जी पर लाठियों से प्रहार करवाने वाला सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स (लाहौर) की **30 अक्टूबर 1928** को भगतसिंह, चन्द्र शेखर आजाद, राजगुरू द्वारा की गई हत्या पहली एच० एस०आर० ए० की क्रांतिकारी गतिविधि थी।
- ❖ एम. एस. आर. ए. के दो सदस्य भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने **8 अप्रैल 1929** को केन्द्रीय विधान मण्डल में जिस समय **ट्रेड डिसप्यूट विल** और सेफ्टी बिल पर बहस चल रही थी, बम फेंका जिसका उद्देश्य सरकार की डराना मात्र था।
- ❖ बम के साथ फेंके गये परचों में एच. एस. आर. ए. का संदेश इस प्रकार था–

  ''बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए बम का प्रयोग किया गया।''
- ❖ केन्द्रीय विधान मण्डल में बम फेंकते समय ही पहली बार भगतसिंह ने 'इन्कलाब जिंदाबाद' का नारा दिया। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर उन पर एसेम्बली में बम

फेंकने तथा कुछ अन्य यंत्रों से जोड़कर **'लाहौर षड्यंत्र केस'** के तहत मुकदमा चलाया गया।

- ❖ लाहौर क्षेत्र केस के तहत एन. एस. आर. ए. के अन्य सदस्यों पर भी मुकदमा चलाया गया। जेल में बंद क्रांतिकारियों ने राजनैतिक कैदी का दर्जा प्राप्त करने के लिए भूख हड़ताल की।
- ❖ भूख हड़ताल पर बैठे **जतिन दास** को 64 दिन बाद 13 सितम्बर, 1929 को मृत्यु हो गई। जतिन का मृत शरीर जब लाहौर से बंगाल लाया गया उस समय कलकत्ता रेलवे स्टेशन पर लगभग 6 लाख लोगों ने महान युवा नेता को श्रद्धांजलि दी।
- ❖ भगतसिंह, सुखदेव तथ राजगुरू पर मुकदमा चला कर फांसी की सजा सुना दी गई।
- ❖ मुकदमे की सुनवायी के दौरान क्रांतिकारी 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा लगाते हुए अदालतों में प्रवेश करते थे और साम्राज्यवाद मुर्दाबाद 'सर्वहारा जिन्दाबाद' का नारा लगाते हुए अदालत से बाहर आते थे।
- ❖ **इन्कलाब जिन्दाबाद** जिसकी रचना मुहम्मद इकबाल ने की थी, का पहलीबार नारे के रूप में भगत सिंह ने प्रयोग किया, इन्होंने ही इस नारे को चर्चित बनाया।
- ❖ **23 मार्च, 1931** को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी गई।
- ❖ एच. एस. आर. ए. के एक मात्र सदस्य चंद्रशेखर आजाद जो काकोरी षड्यंत्र केस से ही पुलिस को चकमा दे रहे थे, लाहौर षड्यंत्र केस से भी बच निकले थे लेकिन **27 फरवरी, 1931** को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में वे मारे गये। इस तरह उत्तर भारत में एच. एस. आर. ए. की गतिविधियां समाप्त हो गई।

➢ **बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन**

- ❖ कांतिकारी आतंकवादी आंदोलन के द्वितीय चरण में बंगाल में अनुशीलन और युगांतर जैसी क्रांतिकारी संस्थायें एक बार फिर से सक्रिय हुई।
- ❖ इसी समय बंगाल में हेम चंद्र घोष तथा लीला नाग ने **बंगाल स्वयं सेवक संघ** तथा अनिल राय ने श्री संघ नामक संस्था की स्थापना की।
- ❖ बंगाल में **सूर्यसेन** जो गांधी के असहयोग आंदोलन के प्रमुख नेता थे, ने **इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी** (आई. आर. ए.) की स्थापना की।
- ❖ सूर्यसेन, चटगांव जो एक बंदरगाह क्षेत्र था, के एक राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। इसके द्वारा स्थापित संस्था आई. आर. ए. के चटगांव शाखा के सदस्यों में अनन्त सिंह, अंबिका चक्रवर्ती, लोकनाथ, प्रीतिलता वाडेदर, गणेश घोष, कल्पना दत्त जैसी नवयुवतियां, आनंद गुप्त और टेमारबल जैसे नवयुवक शामिल थे।
- ❖ 19 अप्रैल, 1930 को सूर्यसेन (मास्टर दा) अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते हुए आई. आर. एका घोषणा पत्र जारी किया जिसमें चटगांव, बारीमा मेमन सिंह स्थित सरकारी शस्त्रागारों पर एक साथ हमला बोलना था।
- ❖ सूर्यसेन के नेतृत्व में आई. आर. ए. के सदस्यों ने चटगांव शस्त्रागार पर आक्रमण कर हथियारों पर कब्जा कर लिया इसी समय 65 सदस्यीय क्रांतिकारी दल के समक्ष सूर्यसेन ने इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों के बीच तिरंगा झण्डा फहरा कर **'अस्थायी क्रांतिकारी सरकार'** का गठन किया जिसके राष्ट्रपति सूर्यसेन बने।
- ❖ 22 मई, 1930 को आई. आर. ए. के सदस्यों और सरकारी सेना के बीच हुए संघर्ष में 80 सैनिक और 12 कांतिकारी मारे गये।
- ❖ 16 फरवरी, 1933 को सूर्यसेन को गिरफ्तार कर लिया गया मुकदमें के बाद 12 जनवरी, 1934 को इन्हें फांसी दे दी गई।
- ❖ बंगाल में आई आर. ए. की गतिविधियों ने बड़ी संख्या में युवाओं को जिसमें कॉलेज की लड़किया भी शामिल थी, को कांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। चटगांव कांड के बाद मिदनापुर में क्रांतिकारियों द्वारा तीन अंग्रेज मजिस्ट्रेट और दो पुलिस महानिरीक्षकों की हत्या कर दी गई।
- ❖ क्रांतिकारी आंदोलन के द्वितीय चरण में बंगाल की महिलाओं की भागीदारी क्रांतिकारी गतिविधियों में अधिक हुई।
- ❖ **प्रीतिलता वाडेदर** ने पहाड़तली (चटगांव) के रेलवे इंस्टीट्यूट मारने के समय मारी गई।
- ❖ **कल्पनादत्त,** सूर्यसेन के साथ 1935 में गिरफ्तार हुई इन्हें आजीवन की सजा मिली।
- ❖ दिसम्बर 1931 में कोमिला की दो युवतियों सुनीति चौधरी और शांतिप नै कोमिला के जिलाधिकारी की हत्या कर दी।
- ❖ फरवरी 1932 में बीना दास ने दीक्षांत समारोह के दौरान उपाधि ग्रहण करते समय गवर्नर पर गोली चलायी।
- ❖ 1920-30 के दशक में चटगांव के आई. आर. ए. संगठन में सत्तर अहमद, फकीर अहमद मियां, गुनू मियां आदि शामिल हुए।

अन्य तथ्य

- ❖ क्रांतिकारी भगत सिंह कुशाग्र बुद्धि के थे, अपने समय के तमाम राजनीतिक नेताओं में वे सर्वाधिक पढ़े-लिखे थे, इन्होंने ने ही सर्वप्रथम क्रांतिकारियों के समक्ष **'क्रांतिकारी दर्शन'** रखा।
- ❖ लाहौर अदालत में पेशी के समय भगत सिंह ने कहा कि 'क्रांति की तलवार पर धार वैचारिक पत्थर पर रगड़ने से ही आती है।''
- ❖ भगत सिंह का मानना था कि व्यक्तिगत प्रयास से क्रांति नहीं लायी जा सकती, व्यापक जनांदोलन ही क्रांति का माध्यम बन सकता है, भगत सिंह मार्क्सवाद की ओर अधिक झुके थे।

- **सुभाष चन्द्र बोस** ने भगत सिंह के बारे में कहा कि ''भगत सिंह जिंदाबाद और इन्कलाब जिन्दाबाद का एक ही अर्थ है।''
- **गांधी जी** ने **भगतसिंह** के बारे में कहा कि ''जहां तक याद पड़ता है किसी भी व्यक्ति के जीवन के साथ इतना अधिक रोमांच नहीं जुड़ा होगा जितना की भगत सिंह के जीवन के साथ जुड़ा है।''
- भगवती चरण बोरा ने **द फिलासफी ऑफ दी बॉम्ब** नामक दस्तावेज जारी किया था।
- लाहौर अदालत में बोलते हुए **भगत सिंह** ने कहा था कि ''क्रांति के लिए रक्तरंजित संघर्ष आवश्यक नहीं है व्यक्तिगत बैर के लिए भी इसमें जगह नहीं, यह बम और पिस्तौल की उपासना नहीं है। क्रांति से हमारा तात्पर्य है कि अन्याय पर आधारित मौजूदा व्यवस्था समाप्त होनी चाहिए।''

क्रांतिकारी आतंकवादी गतिविधियों से जुड़ी महत्वपूर्ण समाचार पत्र, पत्रिका तथा पुस्तकें

समाचार पत्र / पुस्तकें	संपादक एवं प्रकाशन
युगान्तर	वारीन्द्र कुमार घोष, भूपेन्द्र नाथ दत्त
संध्या	मुखदा चरण
वंदेमातरम	अरविन्द घोष
जमींदार	सिराजुद्दीन
भारत माता	अजीत सिंह
इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट	श्याम जी कृष्ण वर्मा
वंदेमातरम	मैडम कामा (लंदन)
'मदर'	हरदयाल (न्यूयार्क)
बंदी जीवन	शचीन्द्र नाथ सान्याल
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	बी. डी. सावरकर
'भवानी मंदिर'	अरबिन्द घोष
'वर्तमान रणनीति'	बारीन्द्र कुमार घोष
पथेर दावी	शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय
वम मैनुअल	पी. एन. वापट

●●●

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR